प्रकाशनार्थ

वि.सं.के. 04 अक्टूबर 12 रांची । राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मा. मोहन राव मधुकर भागवत जी का रांची के सीएमपीडीआई स्थित साभागार में प्रबुद्ध जन संवाद सायं सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत सायं 5 बजे से चाय के साथ लोगों के साथ बातचीत हुई। लगभग 5.45 बजे अतिथियों का आगमन, दीप प्रज्जवलन और भारत माता के चित्र पर मार्ल्यापण किया गया। अतिथि परिचय श्री अरुण कुमार जी, रांची महानगर कार्यवाह ने किया। स्वागत भाषण प्रांत संघचालक मा. जगन्नाथ शाही जी ने किया। उन्होंने कहा कि भारत वह भूमि है जहां धर्म सर्वत्र विराजमान है। गंगा स्वयं इस भूमि को सिंचित करती है। अतिथियों को शाल एवं श्रीफल देकर सम्मानित किया गया।

/ मंच पर क्षेत्र संघचालक मा. सिद्धिनाथ सिंह, प.पू.सरसंघचालक जी एवं प्रांत संघचालक मा. जगन्नाथ शाही /

पूज्य सरसंघचालक जी ने विषय प्रवेश की प्रस्तावना को रखा। पूज्य सरसंघचालक जी ने कहा कि जिज्ञासा होने के लिए ही कुछ बुनियादी जानकारी आवश्यक होती है। एकता का उपयोग अपने देश को समर्थ बनाने में लगाना चाहिए, न कि दुनियां को दबाने में। भगवान भी भाग्य बदलने में उसी का सहायता करते हैं जो स्वयं आगे बढ़ता है। उन्होंने स्पष्ट किया कि संघ का भाजपा से कोई संबंध नहीं है। संघ को राजनीति नहीं करनी है। संघ सदैव सामाजिक सद्भाव में विकास रखता है ।अंतर इतना है कि भारत के अन्य राजनीतिक दलों के वनिस्पत भाजपा में संघ के स्वयंसेवक अधिक है। इसलिए इनका संघ से ज्यादा निकटता है। संघ के लिए भारत के सभी राजनीतिक दल अपने है। उन्होंने आगे कहा कि हिन्दुस्तान हिन्दू राष्ट्र है, इसमें कोई संसय नहीं। हिन्दू कोई पूजा पद्धति नहीं है। भारत के मुसलमान और इसाई जब विदेश जाते हैं तो उन्हें हिन्दू–मुसलमान, हिन्दू–इसाई उप नाम से पुकारा जाता है। संघ हिन्दुस्तान में रहने वाले हर नागरिक को हिन्दु मानता है। चाहे उसकी उपासना पद्धति कुछ भी हो।

लगभग 100 से अधिक प्रश्न मेल, एसएमएस एवं लिखित भेजे गए थे। जिनमें जो समान प्रश्न थे उन्हें समाहित कर कुछ प्रश्नों को सरसंघचालक जी के पास रखा गया। लोगों की प्रश्नों का उत्तर देते हुए सरसंघचालक जी ने कहा कि जो प्रश्न मेरे समक्ष लाये गये हैं वह अधिकतम मेरी जानकारी के अनुसार होगी। मैं आपकी जिज्ञासा का समाधान शत्प्रतिशत नहीं कर सकता, क्योंकि समाधान तो स्वयं में होती है। सामाजिक और राष्ट्रीय मूल्यों का संरक्षण और संवर्द्धन किसी भी समाज या राष्ट्र की उन्नति के लिए उसकी सुरक्षा के लिए अतिआवश्यक होता है। मूल्य अगर साश्वत सत्य है तो वह अमिट है। स्वयं के जीवन में उन मूल्यों को उतारना ही श्रेयस्कर है। मूल्य आधारित सामाजिक संरचना हम सब अपने जीवन में इसको शतप्रतिशत उतारने से ही संभव है। आरएसएस से जुड़ने के संबंध में उन्होंने कहा कि इसके लिए सबसे बेहतर व आसान तरीका शाखा है, दूसरा कोई नहीं। आप शाखा में आयें, इनके साहित्य को पढ़े। पाकिस्तानी हिन्दुओं के मदद के संदर्भ में पूछे गये सवाल के जबाव में उन्होंने कहा कि संघ के स्वयंसेवक इस क्षेत्र में भी काम कर रहं हैं, किंतु इसके लिए समाज को आगे आना होगा और उन्हे अपना समझना होगा। घुसपैठ के संदर्भ में उन्होंने कहा कि यह हर हिन्दुस्तानी का कर्तव्य है कि इस संवेदनशील मुद्दे को राष्ट्र हित में सोचें और इसपर सामाजिक जागरण से ही रोक लग सकता है। शाखाओं में उपस्थिति कम होने के मुद्दे को सरसंघचालक जी ने कहा कि ऐसा नहीं है कि संघ शाखा पर उपस्थिति कम है। बल्कि समाज के अन्यान्य क्षेत्रों में अपने स्वयंसेवक संघ के विचार, संस्कार को फैला रहे हैं। उन्होंने उपस्थित लोगों से आह्वान किया कि यदि आप चाहते हैं कि संघ समाज में अच्छा काम करे तो आप पुरुष हैं, तो संघ से जुड़े और यदि महिला हैं तो सेविका समिति से जुड़कर समाज को और देश को आगे बढ़ाये। अल्पसंख्यकों के संदर्भ में उन्होंने कहा कि शाखा में अल्पसंख्यक भी आते हैं। किंतु इनकी संख्या काफी कम है।

संघ अल्पसंख्यकों के बीच भी सेवा कार्य करता है। अनेक प्राकृतिक आपदाओं के समय अल्पसंख्यकों के बीच संघ के द्वारा किये गये कार्यों की प्रशंसा की गई है और हजारीबाग, पाकुड़ जैसे क्षेत्रों में किए जा रहे सेवा के कार्य सभी के बीच है। हम इसे तथाकथित अल्पसख्यक नहीं बल्कि भारत माता के पुत्र मानते हैं। हम अल्पसंख्यकों को वोटर नहीं अपना भाई मानते हैं। भ्रष्टाचार जैसे संवेदनशील मुद्दे पर पूछे गये प्रश्न के जबाव में सरसंघचालकजी ने कहा कि भ्रष्टाचार मन से पैदा होता है जिसे केवल कानून से नहीं रोका जा सकता। देश में भ्रष्टाचार के विरोध में जिन्होंने भी आंदोलन किया, संघ के स्वयंसेवक उन आंदोलनों में पूरा समर्थन दिया। जब तक हम अपना मन नहीं बदलेंगे तब तक इस भ्रष्टाचार से हम मुक्ति नहीं पा सकते। राम मंदिर बनेगा या नहीं? इस संदर्भ में संघ की क्या भूमिका होगी? इसं संदर्भ में उन्होंने स्पष्ट किया कि यह पूरा आंदोलन हिन्दु समाज का है। जिसे संत समाज संचालित कर रहा है और यह पूरा समस्या न्यायालय के समक्ष विचाराधीन है। यह झगड़ा सिर्फ राजनैतिक झगड़ा है। राजनीतिक दल चाहते हैं कि यह समस्या बनी रहे और वोट की राजनीति चलती रहे। राम जन्मभूमि पर राम मन्दिर ही बनेगा, इसके लिए संघ कटिबद्ध है। आरएसएस मुद्दों के आधार पर संगठन नहीं चलाते, बल्कि शुद्ध साकारात्मक आत्मिय प्रेम से यह संगठन करता है।

एकल गीत श्री ओमप्रकाश जी ने प्रस्तुत किया। इसके उपरांत परम पूज्य सरसंघचालक जी द्वारा कार्यक्रम का समारोप किया गया। अपने समाारोप सम्बोधन में उन्होंने कहा कि संघ हिंसा, ईर्ष्या इन सबों में विश्वास नहीं करती। समाज के हर तबके को हम अपना भाई–बहन मानते हैं। वन्देमातरम् श्रीमती मंजूषा देशमुख ने गाई। इसी के साथ खचाखच भरे सीएमपीडीआई हॉल में झारखंड सरकार के अनेक मंत्राी बुद्यिजीवि चिकित्सक शिक्षाविद् सहित शहर के अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। मंच पर क्षेत्र संघचालक मा. सिद्धिनाथ सिंह, प्रांत संघचालक मा. जगन्नाथ शाही उपस्थित थे। मंच संचालन आरएसएस के सह कार्यवाह श्री राकेश लाल ने किया।

———— संजय कुमार आजाद

प्रांत प्रमुख विश्व संवाद केन्द्र